

*ضع اسم حيوانٍ أو طيرٍ في الفراغ

रिक्त स्थान में पशु अथवा पक्षी का नाम भरें

१- {وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا (.....)}

{तथा (याद करो) जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने समुदाय से कहा: अल्लाह तुम्हें आदेश देता है (.....) की बलि चढ़ाने का}

२- {فَالْتَقَمَهُ (.....) وَهُوَ مُلِيمٌ}

{तो निगल लिया उसे (.....) ने और वह निंदित था}

३- {وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى (.....) أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ}

{और उन्होंने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा: क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ (.....) को, या वह अनुपस्थितों में है}

४- {فَبَعَثَ اللَّهُ (.....) يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورِى سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ}

{फिर अल्लाह ने एक (.....) भेजा जो भूमि कुरेद रहा था ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाए}

۵- { قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ (.....) وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ }

{ उन्होंने कहा: मुझे बड़ी चिंता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ कि उसे (.....) न खा जाए, और तुम उस से असावधान रह जाओ }

۶- { يَأْيُهَا (.....) ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ }

{ हे (.....) प्रवेश कर जाओ अपने घरों में, ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दें सुलैमान तथा उसकी सेनाएं, और उन्हें भान न हो }

۷- { ان هذا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ (.....) وَلِي (.....) وَاحِدَةٌ }

{ यह मेरा भाई है इसके पास नित्यानवे (.....) हैं तथा मेरे पास एक (.....) है }

۸- { فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ (.....) إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرَكْهُ يَلْهَثْ }

{ तो उसकी दशा (.....) के समान हो गई जिसे हांको तब भी जीभ निकाले हाँपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हाँपता है }

۹- { أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ (.....) }

{क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने (.....) वालों के साथ क्या किया?}

१०- {كَأَنَّهُمْ (.....) مُسْتَنْفِرَةٌ * فَرَّتْ مِنْ (.....)}

{मानो वह (.....) हैं बिदकाए हुए। जो (.....) भागे हैं}

११- {فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ (.....) مُبِينٌ}

{फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी लाठी फेंकी तो अकस्मात वह एक (.....) बन गई}

१२- {مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ (.....) يَحْمِلُ أَسْفَارًا}

{उनकी दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म नहीं किया उस (.....) के समान है जिसके ऊपर पुस्तकें लदी हैं}

१३- {وَيَا قَوْمِ هَذِهِ (.....) اللَّهُ لَكُمْ آيَةٌ فَذُرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ}

{हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह की (.....) तुम्हारे लिए एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरे, और उसे कोई दुःख न पहुँचाओ}

١٤ - {وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَىٰ (.....) أَنْ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ}

{हमने (.....) को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनाई छतों में}

١٥ - {فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَ (.....) وَ (.....) وَ (.....) وَالْدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ}

{अन्ततः हम ने उन पर तूफान (उग्र वर्षा) तथा (.....) और (.....) एवं (.....) और रक्त की वर्षा भेजी, अलग-अलग निशानियां, फिर भी उन्होंने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति}

١٦ - {مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ (.....) اتَّخَذَتْ بَيْتًا}

{उनका उदाहरण जिन्होंने बना लिये अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक, (.....) जैसा है, जिसने एक घर बनाया}

١٧ - {فَلَمَّا عَتَوْا عَمَّا نُحُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا (.....) خَاسِئِينَ}

{फिर जब उन्होंने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोके गए थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ (.....) हो जाओ}

۱۸ - { أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى (.....) كَيْفَ خُلِقَتْ }

{ क्या वे (.....) को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं? }

۱۹ - { خُشَعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ (.....) مُتَشَشِرٌ }

{ झुकी होंगी उनकी आँखें, वे निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वे (.....) हों बिखरे हुए }

۲۰ - { يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ (.....) الْمَبْنُوثِ }

{ जिस दिन लोग बिखरे (.....) के समान (व्याकुल होंगे) }

۲۱ - { مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ (.....) وَ (.....) }

{ जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ तथा उन में से (.....) तथा (.....) बना दिये गये }

۲۲ - { فَرَاغَ إِلَى أَهْلِهِ فَجَاءَ (.....) سَمِينٍ }

{ फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया और एक मोटा (भुना हुआ) (.....) लाया }

۲۳- { فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ (.....) تَسْعَى }

{ तो उसने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक (.....) थी जो दौड़ रही थी }

۲۴- { ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ مِّنْ (.....) اثْنَيْنِ وَمِنْ (.....) اثْنَيْنِ }

{ आठ पशु आपस में जोड़े हैं (.....) में से दो तथा (.....) में से दो }

۲۵- { إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا (.....) فَمَا فَوْقَهَا }

{ अल्लाह (.....) तथा उससे तुच्छ चीज़ से उपमा देने से नहीं लजाता }

۲۶- { قَالُوا نَفَقْدُ صُوعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ (.....) وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ }

{ उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है, और जो उसे ला दे उस के लिए एक (.....) का बोझ है और मैं उसका प्रतिभू हूँ }

۲۷- { إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ كَأَنَّهُ (.....) صُقْرٌ }

{वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियां भवन के समान। मानो वह पीले
(.....) हों}

२८- {قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّئُ عَلَيْهَا وَأُشْفِي بِهَا عَلَى (.....) وَلِي فِيهَا مَأْرَبٌ أُخْرَى}

{उत्तर दिया: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस में से अपनी
(.....) के लिए पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इसमें दूसरी
आवश्यकताएं भी हैं}

२९- {إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا (.....) وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ}

{जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वह सब एक (.....)
नहीं पैदा कर सकते}

३०- {وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطٍ (..) تَرْهَبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ}

{तथा तुम से जितनी हो सके उनके लिए शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिए
(.....) तैयार रखो, जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने
शत्रुओं को डराओ}